अंतरा-शब्दशक्ति

सुख सागर

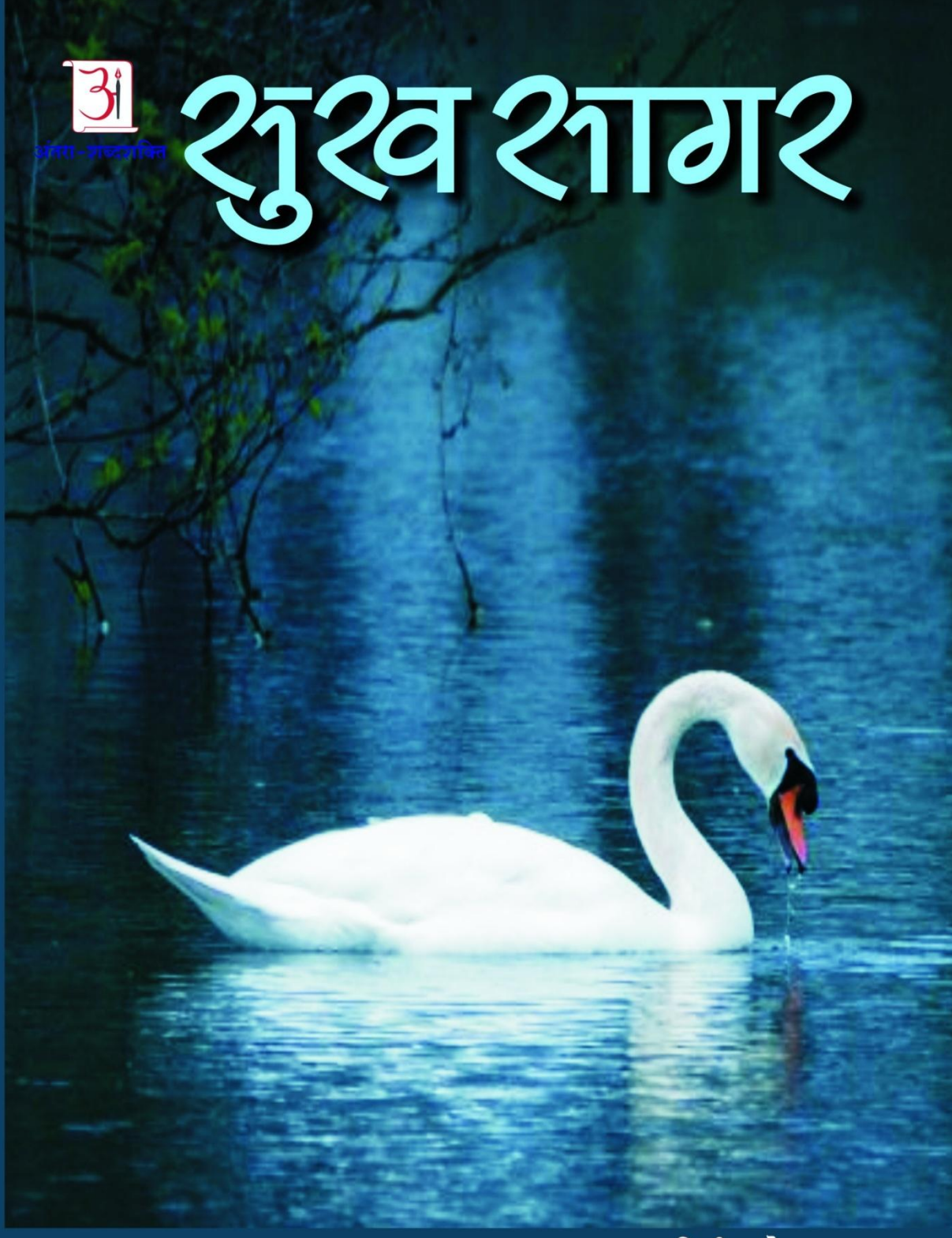

काव्य संग्रह

विनीता पैगवार

सुख सागर

(काव्य संग्रह)

विनीता पैगवार

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-42-1

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © विनीता पैगवार

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Sukh Sagar' by "Vinita Paigwar

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं ।प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं । अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं । किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

मैं बचपन से नाना-नानी के घर पली बढ़ी हूँ। मेरे माता-पिता दोनों शिक्षक थे बहत ही सीधे साधे सच्चे पालक है मेरे। मेरे नाना जी कहानीकार व नाटककार थे। यहाँ जबलपुर में उनके लिखे नाटक मंचित हो चुके थे। मेरे पिता बहत ही आध्यात्मिक स्वभाव के है।सदगुरु ओशो के परमभक्त स्वयम् ओशो ने उन्हें दीक्षा दी थी। वे मुझे छोटी -छोटी पुस्तक पढ़ने बचपन से दिया करते थे।

अपनी कापियों में किस्से कहानी लिखना मुझे बहत भाता था। पर मेरी प्यारी मौसी अचानक दूर चली गई, मैंने उनके अच्छे कार्यो का उल्लेख कहानी के रूप में दैनिक भास्कर अख़बार में प्रकाशित कराया, वह मुझे बहत कम ही लगा, फिर मैंने उनके पूरे जीवन का विवरण उपन्यास के रूप में लिखा, जिसमे मेरे नाना-नानी व सभी मौसी अपनी माँ की बचपन से मौसी की अंत समय तक की सही घटनाक्रम को कथा के रूप में प्रस्तुत किया। मेरे प्राचार्य पिता बहत हर्षित हए 'रेणु की दिव्य ज्योति' पढ़कर।

मेरे पति ने भी मेरा हमेशा उत्साहवर्धन कर मार्गदर्शन किया।

किताब लिखने का उद्देश्य- अपने भाव को सृजन का रूप देना, लोगो को बुराइयों के प्रति जागृत करना और जीवन कितना सुंदर है यह अभिव्यक्त करना। काव्य पंक्तियां हमे नई ऊर्जा से अभिभूत करती है। लेखन हमें अनावश्यक कार्यो से बचाता है। इससे हमें बहुत सुख मिलता है।

विनीता पैगवार

अनुक्रमणिका

1. फूल	5
2. मौत	6
3. अहंकार	7
4. माँ	8
5. स्वाभिमान	9
6. अरज	10
7. नारी	11
8. गर्मी	12
9. खुल गई पोल	13
10.सात जन्मों का बंधन	14
11.राज	15
12.मेरी परीक्षा	16

फूल

डाली में खिले थे फूल
काँटों संग हँसे थे फूल
आया बाग में एक माली
तोड़ डाली से ले गया फूल,..

दर्द से व्याकुल हुआ न फूल
डाली से बिछड़ा था फूल
गम को पीना सीखा कैसे
हँसी से वादा किया था फूल,..

सजा था अर्थी में जब फूल
जान लिया सब भेद था फूल
क्षण भंगुर के जीवन में
रोना न करना न भूल,..।

मौत

बिना इंतजार के आती है वो
सन्नाटे में चुपचाप पहुँचा देती,

मेरी सदा को अनसुनी करती
देख मुझे मुस्कुराती है वो।

कहती है मैं हूँ दूसरा पहलू
मुझे समझ न अनजान बन,

सच्चाई से मेरी बेख़बर क्यों रहता है
अपने जीवन से तू क्यों न प्यार करता है।

बेजान फिरता है तू राहों मेंब्कीमत
भूल गया हो जैसे आई न बहार कभी,

तो शिकवा कैसा? मुझसे मैं हूँ मौत
मेरी सच्चाई से डरना कैसा।

कोई बेकरारी से न करे इंतजार
पर मैं आऊँगी जरूर एकबार,

खबरदार अपने मन से कभी न बुलाना मुझे
ठोकरे खाओगे
पछताओगे महापाप के भागी बन जाओगे।

अहंकार

जब जब अहंकार की
आंधी चली है भाई
समझो किसी विनाश की
आवाज दी है सुनाई,

घमंड से न भरो घड़ा
यह है बड़ा दुखदाई
चारो खाने चित हुए
जब सत्य की आंधी आई,

गरूर की बातें करते हो
यह नेक नही है भाई
गिरते है सितारे आसमां से
तेरी क्या है बखत भाई,...।

माँ

अक्स मैं तेरा हूँ माँ
जीवन पाया तुझसे माँ
प्यार तुझको न दिया
कैसा पुत्र मैं तेरा माँ,..

पीड़ा तूने झेली माँ
सुख कितने बरसाई माँ
वक्त अपना न दे सका
कैसा सुत मैं तेरा माँ,..

प्रतिबिम्ब खुदा का तू है माँ
क्यों न मैं पहचाना माँ
स्वर्ग था चरणों में तेरे
क्यों भटकता था मैं माँ,..।

स्वाभिमान

अग्नि परीक्षा दे कर भी
कठिन दौर से गुजरी
कष्टों के बिहड़ वन में
इम्तहान की हर घड़ी,

आँसू के सागर में भी
हर बार सफलता पाई
नन्हे फूलों में जीवन की
ज्योत नजर थी आई,

सुख की परछाईं भी
तनिक न टिकने पाई
हुआ सामना स्वामी से
धरती की गोद समाई,

हो गई सारी परीक्षा
खत्म हुए इम्तहान
दे गई सीख जग को
नारी का अपना स्वाभिमान,...।

अरज

मेरी
अरज सुनो
उन्नति के द्वार
खोलो तो
भगवन।

भटकता
फिर रहा
कई जन्मों से
राह दिखाओ
भगवन।

क्षमा
मुझे करो
विनती करूँ तुमसे
कुछ करो
मेहरबानी।

महाकाल
तुम हो
जग के त्रिपुरारी
पार लगाओ
नैया।

नारी

अपनी आन बान के खातिर
मुझे न बनना है कमजोर
पटक-पटक कर मार गिरेहूँ
चाहे कितना हो दमखोर,..

आँख नोंच लूँ उन पापी की
बुरी नज़र जो नारी ओर
हाथ काट लूँ ओ पापी का
उसका न बचे कोई छोर,..

कोमल दिखती पर फौलादी
आँख बरसती, अंगारा सी
जन्म दी तोहे एक नारी ने
मिटा दी ममता जीवन की,..।

गर्मी

इस गर्मी में नही तपूंगी
बैचेनी में नही जियूँगी
न समझो ऐसी वैसी
घर में लगा दो तुम ए सी,

समझौते की बात न करियो
कूलर पंखा साइड में धरियो
हालत हो गई है कैसी
घर में लगा दो तुम ए सी,

जा गर्मी में कछु न भाये
गरम लपट में जी घबराये
तड़पु ऐसे मछली सी
घर में लगा दो तुम ए सी,

संग सहेली जब घर आये
किटी पार्टी मनहु न भाये
बोर लगे है जा बी सी
घर में लगा दो तुम ए सी,

सुलह करना नही, जब लो लगे ना ए सी,...।

खुल गई पोल

कैसे संतन बने थे भैया
मेरा मनवा है घबराय
संत बने और पाप करत है
ढोंग करे है वो दिन रात,

पिता के साहस ने किया है
एक ढोंगी का परदा फाश
न्याय दिलाने बेटी को वह
झुका नही मानी न हार ,

साहस से पीछे न हटा था
बेटी सबकी है अनमोल
न्याय मिला जब उस बेटी को
रोया पापी खुल गई पोल,...।

सात जन्मों का बंधन

सात फेरे के बंधन में
तुमको मैंने पाया है
सात जन्मों का नही बन्धन
सदियों पुराना यह नाता है,

अनजान कभी थे राहों में
गुमनाम थे मेरी निगाहों में
सात फेरे के बन्धन है ऐसे
हो सदियों तेरी पनाहों में,

कितनी बार हम मिले है
नाता जाना पहचाना है
रूप बदल के बार बार
तुमको मैंने पाया है,....।

राज

एक राज है जीवन का
जो समझे सुख पाय
समझे कुंजी प्रेम की
भरम सभी मिट जाय,

प्रेम पाठ प्रभु सिखाये
लिये कई अवतार
रहस्य प्रेम का बताये
करुणा निधि करतार,

प्रेम से पाहन पिघले
पिघले धरा आकाश
प्रेम पूजा अमर रहे
उनमे प्रभु का वास।

मेरी परीक्षा

कैसे संयम मैं करूँ
कैसे रखूँ मैं धीर
मुझमें वह शक्ति कहाँ है
छिपा लूँ अपनी पीर।

अंखियो की धारा मचली हैं
अपने पिय के दर्शन को
रोम -रोम विरह में डूबा
आग लगी है तन मन को।

प्रीत का रंग चढ़ा जो मुझ पर
सुध -बुध अपनी खो बैठी हूँ
चुपके से तुम आ जाओ साजन
अपना आपा खो चुकी हूँ।

धैर्य की मेरी परीक्षा न लो
मैं बिरहन हूँ मीरा सी
हर पल तरसुं तुम्हे पुकारूँ
धीरज नही है सीता सी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - विनीता पैगवार

माता - श्रीमती चंद्रावती पैगवार

पिता - श्री हनुमान प्रसाद पैगवार

पति - डॉ. अनिल कुमार कोरी

शिक्षा - एम.ए., डी.एड़

प्रकाशन - रेणु की दिव्य ज्योति, अस्तिस्व की बहार (काव्य कृति)

सम्मान 1. पाथेय सृजनवी सम्मान, 2. सृजन शब्द शक्ति सम्मान ।

3. साहित्य रत्न अलंकरण (जागरण साहित्य संस्था)।

4. साहित्य रत्न सम्मान (हिन्दी सेवा समिति, म.प्र.)।

5. हिन्दी सेवी सम्मान (हिन्दी रचनाकार मंच)।

6. हिन्दी साहित्य गौरव सम्मान, 7. श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान (भोपाल, म.प्र.)।

8. हिन्दी सागर सम्मान, 9. श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान।

10. साहित्य रत्न सखी सम्मान (गुडगांव)।

11. नारी सागर सम्मान (विश्व हिन्दी रचनाकर मंच)

12. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018।

13. भाषा सारथी सम्मान (मातृभाषा उन्नयन संस्थान)।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनानें में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-42-1
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com